केतना मुश्किल बा

समन्वय प्रकाशन

के०बी० ६७, कविनगर, गाज़ियाबाद (उ०प्र०)

केतना मुश्किल बा

डॉ० रामनिवास 'मानव'

अनुवादक :

डॉ० भगवानसिंह 'भास्कर'

(डॉ० रामनिवास 'मानव' के भोजपुरी में अनूदित कविता-संग्रह)

ISBN : 978-81-88971-45-9

समन्वय प्रकाशन
के०बी० ६७, कविनगर, प्रथम तल,
गाज़ियाबाद–२०१००२ (उ०प्र०)

●

मूल्य : १५०.०० रुपये
प्रथम संस्करण : २००६ © लेखकाधीन
आवरण : रवीन्द्र शर्मा

●

कम्पोज़िग : सन्तोष कम्प्यूटर्ज, हिसार (हरि०)
मुद्रक : क्वालिटी सिस्टम, शाहदरा–११००३२

Ketna Mushkil Ba (Bhojpuri Kavita-Sangraha)
By Dr. Ramniwas 'Manav'
Edition : 2009 Rs.150.00

वरिष्ठ शब्द–शिल्पी
आ अग्रज तुल्य आत्मीय मित्र
डॉ० सूर्यदेव पाठक 'पराग'
के
सादर–सप्रेम समर्पित।

भूमिका

दुनिया में कुछ चीज सुन्दर होली, कुछ असुन्दर। सुन्दर चीजन के देखिके आदमी प्रसन्न हो जाला आ असुन्दर चीजन के देखि के नाक–भौं सिकोड़ ले ला। 'साहित्य–प्रभा' पत्रिका के सम्पादक चन्द्रसिंह तोमर 'मयंक' के साहित्यिक आयोजन प्रकति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त के जन्मस्थली कौसानी में २७ आ २८ जून, २००७ के रहे। 'मयंक' जी के निमंत्रण मिलल हमरा के सम्मानित करे के। हम बहुत खुश भइलीं कि चल, एही बहाने पन्त जी के जन्मभूमि के दर्शन होई।

हम एगो गैर साहित्यिक पेशा में बानीं जहां साहित्य के कवनों महत्त्व नइखे। इहे ना, साहित्य के नाम पर लोग मजाक करे से भी बाज ना आवे। अइसन स्थिति में साहित्यिक कार्य के नाम पर छुट्टी मिले के त कवनो सवाले नइखे। पदाधिकारी रहला के चलते हमार दायित्व भी अउर लोगन से बेसी रहेला। संयोग से एही बीचे हमार स्थानान्तरण मैरवा से महाराजगंज हो गइल। हम महाराजगंज में योगदान करिके छुट्टी में चल दीहलीं। कवनों प्रभार ना रहला से आ तुरंते योगदान कइला से छुट्टी मिले में ज्यादा दिक्कत ना भइल।

कौसानी पहुंचि के हमरा बहुत खुशी भइल। शुरू में हमरा के सिवान के साहित्यकार जानिके साहित्यकार भाई लो हमार खूब मजाक उड़ावल। ओइजा देशभर के लगभग पांच दर्जन से बेसी साहित्यकार रहे लो। रात में कवि–सम्मेलन भइल। कवि–सम्मेलन में हिसार (हरियाणा) के डॉ० रामनिवास 'मानव' के कविता सुनि के हम बहुत प्रसन्न भइलीं। भाव, भाषा, शिल्प आ प्रस्तुति, हर दष्टि से कविता बेजोड़ रहलीसन। उहां के कविता के खूब प्रशंसा भइल। खूब ताली बजलीसन। पूछला पर मालूम भइल कि हिन्दी–कविता के विभिन्न विधा में उहां के दुई दर्जन से बेसी किताब प्रकाशित बाड़ीसन। हरियाणा, उत्तराखण्ड, गुजरात आ महाराष्ट्र आदि राज्यन में उहां के साहित्य, विशेषकरि के कविता के काफी प्रतिष्ठा बा। हम सोचे लगलीं कि डॉ० 'मानव'

के कुछ चुनल कवितन के भोजपुरी में अनुवाद करब। फेर सोचलीं कि जे भोजपुरी जानता, ऊ हिन्दीओ जानता। त फेर ओकरा खातिर हिन्दी–कवितन के भोजपुरी अनुवाद कहां तक उचित बा ?

कौसानी में एकरा पहिले एगो घटना घट चुकल रहे। कार्यक्रम के पहिलका दिने सांझ के बेरा। कार्यक्रम गांधी आश्रम कौसानी में रहे। एह से गांधी जी के नियम के अनुसार सांझ के बेरा प्रार्थना–'रघुपति राघव राजाराम' भइल। फेर आयोजक 'मयंक' जी के मेहरारु दूगो भजन अपना सुरीली आवाज में सुनवली। लोग खूब ताली बजावल। संचालक के लहि गइल। ऊ कहले कि ई त मेहरारू लो का ओर से भइलहा। अब मरदानालो का ओर से हो जाव। सब साहित्यकार लो बगल झांके लागल। केहू ना सुगबुगाइल त हम खाढ़ भइलीं आ आपन दूगो भोजपुरी भजन–'गोरी ! जइबू ससुररिया कवन दिनवा ?' आ 'बताव गोरी ! केकरा से कहां मिले जालू ?' सुनवलीं। खूब ताली बजलीसन। लोग खूब प्रशंसा कइल।

रात्रि कवि–सम्मेलन में कविता पढ़े खातिर हम खाढ़ भइलीं। हिन्दी में कविता पढ़े के चहलीं। चारु ओर से हल्ला भइल–''रउवा भोजपुरी में कविता पढ़ीं। रउरा से हमनी भोजपुरी में कविता सुनब।'' भोजुपुरिये में हम कविता–पाठ कइलीं।

भोजपुरी क्षेत्र के बाहर देशभर के हिन्दी के नीमन–नीमन साहित्यकारलो का सामने भोजपुरी के झण्डा गड़ा गइल। भाषण, सरस्वती वन्दना, भजन, कवि–सम्मेलन, सब जगे हम आ हमार भोजपुरी आगे–आगे रहल। जे सिवान के नाम पर हंसत रहे, ऊ समे पीछे हो गइल।

भोजपुरी के ताकत आ मिठास के अहसास हमरा भइल। हम हिन्दी आ भोजपुरी दूनू भाषा में लिखिले। दूनू भाषा में हमार दू दर्जन किताब प्रकाशित बाड़ीसन। सैकड़ों राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय आ क्षेत्रीय आयोजनन में हम भाग लीहले बानीं। बिहार के बाहर दिल्ली, विलासपुर (छत्तीसगढ़), रानीगंज (प० बंगाल), जमशेदपुर (झारखण्ड), राबर्टसगज, देवरिया, खुखुन्दु, गाजीपुर, भाटपार रानी (सब उत्तर प्रदेश) आदि अनेक जगहन पर भोजपुरी के झण्डा फहरवले बानीं, बाकिर भोजपुरी भाषी लोगन के बीच। आज हिन्दी भाषी लोगन के बीच भोजपुरी के झण्डा एतना ऊंचा देखिके हमार मन सातवां

आसमान पर चढ़ि गइल। अपना मातभाषा के मिठास आ आन्तरिक सौन्दर्य के हमरा साक्षात् दर्शन भइल। हम निश्चय कइलीं कि डॉ० रामनिवास 'मानव' के सुन्दर कवितन के भोजपुरी के मिठास से सराबोर करब। उहां के हिन्दी कवितन के भोजपुरी के रंग में रंगि देब। उनका कवितन के भोजपुरी में अनुवाद करब। भोजपुरी में एकर जरूरत बा।

डॉ० रामनिवास 'मानव' से हमार पहिल परिचय एहीजा भइल। धीरे–धीरे हमनी के परिचय प्रगाढ़ होते चल गइल। हम उहां के कवितन के भोजपुरी अनुवाद करे के आपन इच्छा जतवलीं। उहां के सहर्ष तइयार हो गइलीं। उहां के कहलीं–''हमरा कवितन के अनेक भाषा में अनुवाद हो चुकल बा। भोजपुरी में हमरा कवितन के अनुवाद होखो, ई बहुत खुशी के बात बा। हमनी के हिन्दी के विश्वभाषा जानीले, बाकिर वास्तव में विश्वभाषा भोजपुरी बिया, हिन्दी ना। संसार में हिन्दी के नाम पर जवन प्रतिष्ठा बा, ऊ सब भोजपुरी के ह।''

बाद में डॉ० 'मानव' आपन कविता हमरा लगे भेज दीहलीं। वोह कवितन के भोजपुरी अनुवाद हम करि दीहलीं। उन्हे अनुवाद–'बहुत मुश्किल बा' रउरा हाथ में बा।

अनुवाद साहित्य के एगो महत्त्वपूर्ण विधा ह। कवनो भाषा के महत्त्वपूर्ण साहित्य के दोसरा भाषा में अनुवाद करि के वोह भाषा के साहित्य भण्डार भरे के पुरान परम्परा चलि आवत बिया। संसार के प्रायः सब देशन में ई प्रचलन बा। लगभग सब भाषा में अनुवाद के प्रक्रिया चलेले। शेक्सपीयर के अंग्रेजी पुस्तकन के अनुवाद प्रायः हर भाषा में पावल जाला। गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' आ प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास के अनुवाद अनेक भाषा में भइल बा।

भोजपुरी भाषा भी एकर अपवाद नइखे। महाकवि कालिदास के 'पूर्वमेघ' के बटोहिया के छन्द में भावानुवाद १९५४ ई० में कैलाशनाथ ओझा कइले रहले। ई मात्र १६ पष्ठ के किताब बिया, बाकिर एकर ऐतिहासिक महत्त्व बा। ई भोजपुरी में अनुवाद के पहिल किताब बिया, भले पातरे स्वरूप में सही। एकरा बाद त अनुवाद के एगो सिलसिला चलि पड़ल। अनेक संस्कत किताबन के भोजपुरी गद्य–पद्य में अनुवाद भइल। एने कुछ दक्षिण भारतीय

किताबनो के अनुवाद भइल हा। बाकिर हिन्दी किताब के भोजपुरी अनुवाद शायद नइरवे भइल। हमरा बुझाता कि एह दष्टिकोण से अपना ढंग के ई पहिल पुस्तक होखी। डॉ० रामनिवास 'मानव' के आधुनिक युगबोध के मुक्त छन्दवाली कवितन के भोजपुरी–अनुवाद के ऐतिहासिक महत्त्व रही।

डॉ० 'मानव' छन्द के मर्मज्ञ कवि बानीं। उहां के अनेक छन्दन में कवितन के रचना करिके विपुल यश अर्जित कइले बानीं। दोहा, त्रिपदी, हाइकू आदि छन्दन में रचल उहां के काव्य पुस्तकन के पढ़े के सौभाग्य हमरा मिल चुकल बा। हिन्दी–साहित्य में उहां के साहित्य–साधना के काफी प्रतिष्ठा बा। 'बहुत मुश्किल बा' के प्रकाशन से भोजपुरी के सुधी साहित्यकार, प्रबुद्ध पाठक आ विद्वान लोगन के उहां के कवित्व के सागर में डुबकी लगावे के सुअवसर मिली।

'बहुत मुश्किल बा' हमार दोसरकी अनुवाद–पुस्तक ह। एइमें डॉ० रामनिवास 'मानव' के इक्यावन छन्दमुक्त कवितन के अनुवाद बा। हर कविता अपना–आपमें बेजोड़ बाड़ीसन। हम अनेक छन्दन में, गीतन का रूप में आ मुक्त छन्द में–तीनू तरे से कवितन के रचना कइले बानीं। छन्दमुक्त कवितन के आपन अलगे सौन्दर्य बा। एइमें कवि के तुकबन्दी आ मात्रा के फेरा में ना पड़े के पड़ेला आ एह से एकर उड़ान तनी बेसी ऊंचाई पर हो जाले। डॉ० 'मानव' के कविता चरम ऊंचाई पर बाड़ीसन। हमरा बुझाता कि 'बहुत मुश्किल बा' के प्रकाशन से भोजपुरी–साहित्य के श्रीवद्धि त होखबे करी, ओकरा प्रतिष्ठा में भी चार चांद लाग जाई। हमरा उमेदे ना, विश्वास बा कि भेाजपुरी–जगत् में 'बहुत मुश्किल बा' के पुरजोर स्वागत होई।

प्रखण्ड कार्यालय के सामने,
लखरांव, सिवान (बिहार)

–डॉ० भगवानसिंह 'भास्कर'
(अनुवादक)

कविता-क्रम

१.	केतना मुश्किल बा	: १५
२.	शब्द यानी कविता	: १६
३.	भयानक समय	: १७
४.	एहीजा ऊ चूक गइले	: १८
५.	शहर के बीचो–बीच	: १९
६.	कर्फ़्यू के माहौल	: २१
७.	आन्हर सुरंग	: २३
८.	मिलिके बोल	: २५
९.	शब्द	: २७
१०.	शब्द–ब्रह्म	: २९
११.	अन्हार के परत	: ३०
१२.	सुरंग से गुजरत	: ३१
१३.	अर्थ–ब्रह्म	: ३२
१४.	लवटि आव घोड़ा	: ३३
१५.	बिचार	: ३४
१६.	मरीचिका	: ३५
१७.	हमरा सामने	: ३६
१८.	काल के कबाड़–घर	: ३७
१९.	एकान्त–चिन्तन	: ३९
२०.	ऊ ना रहले	: ४१
२१.	मकड़ी	: ४२
२२.	का मिलल ?	: ४३
२३.	बाकी	: ४४
२४.	लड़ाई	: ४५
२५.	हम हंसलीं	: ४६
२६.	सूरज होखेला आदमी	: ४७
२७.	हम, मंच आ परदा	: ४९

२८	हमार आंगन	: ५१
२९	सूरज सभे के ह	: ५३
३०.	हम : महानगर	: ५५
३१.	भाग–दौड़	: ५६
३२.	समर्पण	: ५७
३३.	घरौंदन के खेल	: ५८
३४.	महाभारत–प्रक्रिया	: ५९
३५.	होखेवाला इतिहासकार के प्रति	: ६१
३६.	आदमी के विकास	: ६३
३७.	बालू के टीला	: ६४
३८.	सम्बन्ध	: ६६
३९.	कैक्टस	: ६८
४०.	मन के मौसम	: ६९
४१.	पुल के ऊपर–नीचे	: ७०
४२.	दुःख	: ७१
४३.	आस्था	: ७२
४४.	अंगुरी	: ७३
४५.	चितेरे बोल	: ७४
४६.	भुकभुकात अंजोर	: ७५
४७.	पहाड़ के संवाद	: ७६
४८.	आदमी आ पहाड़	: ७८
४९.	रिश्तन के धागा	: ७९
५०.	जंगल में सूर्यास्त	: ८०
५१.	दयारा बुग्याल	: ८१
५२.	गूंज	: ८२
५३.	पहाड़ के नियति	: ८३
५४.	पहाड़ के दर्द	: ८५
५५.	पिट्ठू	: ८६
५६.	पहाड़ के औरत	: ८७

केतना मुश्किल बा

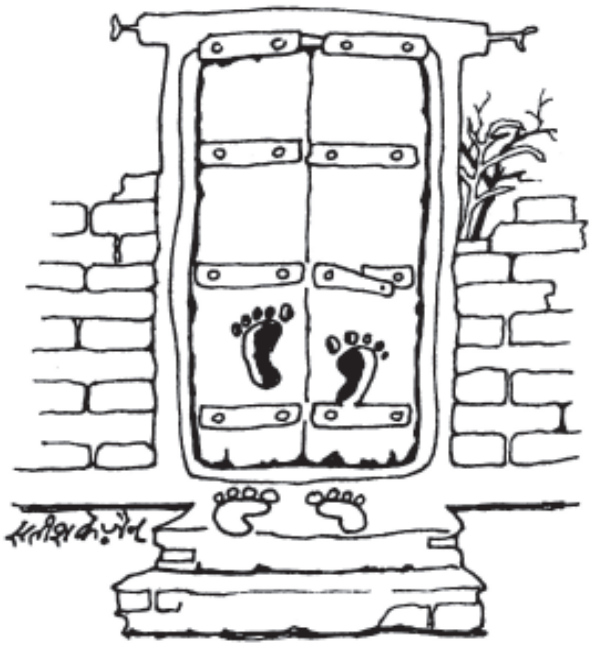

केतना मुश्किल बा//१४//डॉ० रामनिवास 'मानव'

केतना मुश्किल बा

धर्म के लादी ढोवत रहलो पर,
हिन्दू, मुसलमान भा सिक्ख,
जैन, बौद्ध भा ईसाई
भइलो पर
केतना मुश्किल बा धार्मिक भइल !
जइसे कवनो शिल्पी
गढ़त रहे शब्द सुन्दर
भा रचत रहे छन्द टकसाली,
बाकिर शब्द भा छन्द के
रचना के बादो
केतना मुश्किल बा कवि भइल !
धर्म भा कविता
कहंवा बा विधान में !
अभिधान भा परिधान में !!
जइसे बहुत मुश्किल बा
फूल के पराग में,
खुशबू में बदलल,
ओइसहीं बहुत मुश्किल बा
विचार के धर्म में गति
आ भाव के कविता में परिणति !❐

शब्द यानी कविता

बहुत शक्ति होखेले
शब्द में कविता में।
अचूक होखेले एकर मार,
बहुत दूर ले जाले गूंज।

बन्दूक के नली से
निकलल कवनो गोली
एकरा के चुप ना करा सके।
कहीं कुछउ
होखेला अनहोनी
त चीखे लागेले कविता,
खतरा के सायरन के तरे।
एक–ब–एक, खुद,
आ करेले सचेत।

कविता के बात
केहू कान के बहिर
ना सुने, ना समझे,
त का दोष कविता के !
असल में बहुत शक्ति होखेले
शब्द में, कविता में।❐

केतना मुश्किल बा//१६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

भयानक समय

बड़ा भयानक समय से
गुजर रहल बानीं हमनी।

स्कूल गइल बच्चा,
बाजार गइल औरत,
आफिस गइल बाबू,
ठीक–ठाक लवटि आवे,
त गनीमत बा।
ना त कुछउ हो सकता–
अपहरन,
बलात्कार,
हत्या !
एइजा कुछउ हो सकता
केहुवो के साथ।

सांचहूं बड़ा भयानक समय से
गुजर रहल बानीं हमनी।
कुछउ सुरक्षित नइखे आज।❐

केतना मुश्किल बा//१७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

एहीजा ऊ चूक गइले

ऊ पढ़ले :
आजादी बन्दूक के
नली से निकलेले,
आ ऊ बन्दूक उठा लीहले।

ऊ सुनले :
लड़ल जेहाद होखेला,
आ ऊ आपस में,
अपनहीं लोगन से लड़े लगले।

ऊ पढ़ले–सुनले जरूर,
बन्दूकों उठवले
आ लड़बो कइले,
बाकिर सोचले ना–
आजादी आ लड़ाई
काहें आ केकरा से ?

आ एहीजा ऊ चूक गइले।❐

केतना मुश्किल बा//१८//डॉ० रामनिवास 'मानव'

शहर के बीचो-बीच

का हो गइल बा एह शहर के ?
हर दुआर आ मुड़ेर पर
उल्टा लटकल बाड़ीसन अबाबील,
आ घूम रहल बाड़ेसन चमगादड़।
जवन घन बाजार
कबहीं भीड़ से भरल रहत रहे
अउर जहंवा शोर–शराबा से,
चमक–दमक से सटल रहत रहे,
अब बिल्कुल वीरान बा।

सड़क पर घूमत बाड़े
आजुवो कुछ धड़धड़ात चेहरा,
जवन आदमी अइसन लउकत त बाड़े,
बाकिर आदमी नइखन रहत,
काहें कि उनका के देखिके
आंख पथरा जात बाड़ीसन,
चेहरा जर्द हो जाता
आ शरीर में
कंपकंपी अइसन छूटे लागतिया।

आज शहर के सब चिरई
जाके लुकाइल बाड़ीसन खोंतन में।
ओकनी के गावल, पांख फड़फड़ावल,
सब–कुछ बन्द बा।

जबे निकलेले बहरी
कवनो चिरई खोंता से,
बाज के खूनी पंजा
दबोच लेलेसन ओकरा के।
बाकिर एहु पर
कवनो पांख नइखे फड़कत,
काहे कि जे भी पंख फड़फड़ावत बा,
बाज के अगिला निशाना
ओकरे पर सधि जाता।

शहर के बीचो–बीच
गुजरत में लागता
हमनी अपना धर्म–कर्म के ज्ञान
उठाके लमहरा ध दीहले बानीं
आ सूउंसे शहर
एगो बाज के नामे क दीहले बानीं।❐

केतना मुश्किल बा//२०//डॉ० रामनिवास 'मानव'

कर्फ्यू के माहौल

काश्मीर से एगो मित के
चिट्ठी आइल बा, लिखल बा–
अब एइजा नइखे होखत
गोष्ठी–सेमिनार।
नइखे जमत
खिलखिलात महफिल,
बेरौनक बा होटल–बार।
सई बात के एगो बात,
दिन होखे कि रात,
सब जगे
आतंक के हल्ला–बोल बा।
हमरा प्यारा शहर में
कर्फ्यू के माहौल बा।

अपना दोस्त के दर्द के
हमनी मन से जानत बानीं।
ओकर बेबसी, डर आ घुटनो
के हम मानत बानीं।
बाकिर कइसे कहीं हमार मित !
कि हर शहर में
आपन अलगे आतंक बा।
कर्फ्यू बा, दर्द के दंश बा।

धर्म, राजनीति, आ स्वार्थ
आदमी के केतना तुरले बा !

केतना मुश्किल बा//२१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

केहुवो के कुछ
कहे–सुने लायक
भला कहंवा छोड़ले बा !

हमार मित ! तहरा शहर के
हाल सुनिके
डर ना लागल हमरा।
तोहरा दुःख–बेबसी पर
तरस भी ना आइल।
हमरा डर लागल
कि कहीं कर्फ्यू
तोहरा मन में ना उतरि जाव।
तोहार दीया गुल करि देव
आ तोहरा में अन्हार मत भरि जाव।❐

आन्हर सुरंग

अब ई बहस बेमानी बा
कि एह आन्हर सुरंग में
हमनी खुदे ढुकलीं
भा ढकेल दीहले रहे हमनी के
केहू बरिआरी।
अब इहो मुद्दा ना रहल
कि एकरा खातिर
बेसी दोषी तू बाड़,
हम बानीं कि केह तीसर।
अब तथ्य त इहे बा
कि एह आन्हर सुरंग में
हमनी आपस में टकरात बानीं,
लवटि–लवटि आवत बानीं,
बाकिर चाह के भी एकरा से
बहरी निकल नइखीं पावत।
अब सांचों इहे बा
कि अन्हरिया मेटा दीहले बा
हम सभन के पहचान
आ क दीहले बा
सबकर चेहरा बदरूप, बदरंग।
अनन्त बा ई सुरंग।
जबले हमनी एइमें चलत रहब,
खाली अपना के छलत रहब।

केतना मुश्किल बा//२३//डॉ० रामनिवास 'मानव'

एहसे एकरा पहिले
कि ई हजार फन वाला अन्हार
हमनी के लील जाव,
हमार पैना–सघल वार
एकरा जहरीला फन के कील देव,
ताकि सुरंग से निकले के
आसरा बंध सके
आ लक्ष्य सध सके।❐

केतना मुश्किल बा//२४//डॉ० रामनिवास 'मानव'

मिलि के बोल

बोल, सब मिल के बोल,
जोर से बोल,
बात के तउलि के बोल।
बोल कि ई वक्त चुप रहे के ना ह।
एसे बोल–बोल,
सभे मिलके बोल।
अबो ना बोलब, त पछतइब।
फेर चाह के भी कबो कुछ बोल ना पइब।
निश्चित होखेला समय
हर काम के, हर बात के भी,
आ समझल कि अब
ऊ समय आ गइल बा।

तू जानत बाड़,
सक्रिय बाड़ीसन केतना शक्ति
कुचले खातिर शब्द के अस्तित्व।
चाहत बाड़ीसन ऊ
शब्द लिखल ना जाव,
शब्द बोलल ना जाव,
काहें कि शब्द के अनुगूंज
बहुत दूरले जाले।
एहीसे ओकनी के शब्द में,
षड्यन्त्र के दुर्गन्ध आवेले।
बांचि जाला जे लोग
तीर–तोप–तलवार से,

केतना मुश्किल बा//२५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

ऊ लोग भी घबड़ाला
शब्द के मार से।
शब्द वोह लोगन खातिर थाती बा,
बारूद खातिर जइसे जरत बाती बा।
ई बाती बुताये ना पावे।
एसे बोल–बोल,
सभे मिलके बोल,
भेद के खोलि के बोल।
काहें कि शब्द के अनुगूंज
बहुत दूरले जाले।
एही से वोह लोगन के शब्द में
षड्यन्त्र के दुर्गन्ध आवेले।❐

शब्द

एह किताब के हर शब्द
गूंग बा,
कुछ ना बोली।
तू चाहत बाड़ समुझे के
युगबोध के,
त पढ़
खामोशी के आंखिन में तैरत
बेबस अभिव्यक्तियन के।

एह किताब के शब्द
कवनो इकाई ना,
खाली मोहरा बा शतरंज के
भा भीड़ के एगो अंग।
ई शब्द चलेला,
खाली इशारा पर,
आ बोलेला
भा चीखेला,
खाली इशारा पर।

फेर एह शब्द के
आपन अर्थ का भइल ?
खाली आ खाली चुप्पी।
तू चाहत बाड़ चीन्हे के
शब्द के आत्मा के,
त अनुभव कर वोह घुटन के,

केतना मुश्किल बा//२७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

जवन वाक्य के अध्यादेशन के
बोझा के नीचे दबला से
घुमड़ रहल बा
शब्द के फेफड़न में।
ई शब्द कवनो शब्द ना,
वाक्य के अंग,
खाली अंग बनिके रहि गइल बा,
बाकिर अभिव्यक्ति एकरा अर्थ के
वाक्य से भी ना,
वक्ता के अभिप्राय से होखेला।❐

केतना मुश्किल बा//२८//डॉ० रामनिवास 'मानव'

शब्द-ब्रह्म

शब्द झूठ विशेषण ह
भा एगो आकर्षक भ्रम,
पकड़ले बइठल बाड़ जवना के
तू समुझि के ब्रह्म।
तू जानत बाड़,
हर शब्द होखेला खोखला
भीतर से सीप के अइसन।
महत्त्व त बा वोह भावना के,
भर दीले हम सब जवना के
शब्द में, खोखला शब्द में।

भावना ऊ बीया ह,
जवन उगेला शब्द में
अर्थ बनि के
आ जवना के परस
बना देला ब्रह्म
निरर्थक शब्द के।
सोच त, भावना के बिना
तोहार भा हमार का कीमत बा !❐

केतना मुश्किल बा//२६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

अन्हार के परत

अन्हार के एगो धुंधला परत
जमत जा रहल बा
हमरा चारु ओर, धीरे–धीरे।
हम हाथ झटकत बानीं
गोड़ पटकत बानीं,
एह करिया परत के
तूरे खातिर,
बाकिर तबे बिछ जाता
सगरो परिवेश काई बनिके
हमरा गोड़न के नीचे,
आ हम बिछला के
नजदीकी के कोशिश में
अंजोर से दूर,
बहुत दूर होत जात बानीं।
अंजोर उभरत बा
एगो प्रश्न–चिह्न बनिके
हमरा आंखिन के सोझा,
आ अन्हार के परत
गहिरात जात बा
हमरा चारु ओर,
मकड़ी के जाला अइसन,
गते–गते, लगातार।❐

केतना मुश्किल बा//३०//डॉ० रामनिवास 'मानव'

सुरंग से गुजरत

कोंकण–महाराष्ट्र स्थित
रत्नागिरि के पहाड़ियन से
गुजरत बिया हमार रेलगाड़ी–
'सम्पर्क क्रान्ति एक्सप्रेस',
एगो के बाद एगो,
कई गो लमहर–लमहर सुरंगन से।
हमरा लागत बा,
सुरंग से रेलगाड़ी ना,
गुजर रहल बिया हमार जिनगी,
जवना के अन्हार सुरंग के
कतहीं नइखे ओर–छोर,
बा त बस एगो इहे उमेद
होखी शायद कुछ अंजोर
सुरंग के वोह ओर।❐

केतना मुश्किल बा//३१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

अर्थ-ब्रह्म

आज अप्रासंगिके सही
हम तोहरा महफिल में,
बाकिर चुकल नइखीं हम,
निरर्थक भी नइखीं भइल हम।

जब कबो हो जाई
बेकार शब्द कवनो तोहरा में से,
अर्थ तब हमहीं भरबि।
खालीपन के बोध सगरी
तोहार हमहीं हरबि।
एतना मत उछाल,
हाशिया पर मत डाल हमरा के।
शब्द ना, अर्थ हईं हम।

मनलीं, शब्द बिना अर्थ
असहाय होखेला,
बाकिर ब्रह्म के पर्याय होखेला।❐

केतना मुश्किल बा//३२//डॉ० रामनिवास 'मानव'

लवटि आव घोड़ा

होके जवना के पीठ पर सवार
दउड़ावत ले आइल रहलीं जवना के हम
बिना चाबुक, बिना मार,
उहे घोड़ा
अचानक अड़ गइल,
बीच राह में बिगड़ गइल,
आ गिराके हमरा के
गोदत हमार देह
अपना पैना खुरन से,
दउड़त जा रहल बा सरपट,
टपटप–टपटप !

ओकर मद्धिम होखत टापन से
हम लगावत बानीं अनुमान
बहुत दूर जा चुकल बा ऊ।
हम कराहत बानीं,
आ दबल आवाज में
गादे करत बानीं : लवटि आव घोड़ा;
हमार जवानी, ओ प्यारा समय।❐

केतना मुश्किल बा//३३//डॉ० रामनिवास 'मानव'

बिचार

जिनगी हमरा के
बार–बार नोचले बिया।
एसे अब हमहूं सोचले बानीं–
हम जिनगी से बदला लेब,
ओकरा के जी–भरिके नोचब।
अपना शक्ति से ओकरा के
वोही तरे दबोचब,
जइसे कवनो बाज
चिरई के दबोचेला।
ई बिचार खाली हमार ना,
दोस्त, हर आदमी के
आहत अहं इहे सोचेला।❐

मरीचिका

आगी मन में जल रहल बिया,
जबसे जागल बानी।
प्यास से बेचैन होके
पानी के खोज में हम
हर मरीचिका के पीछे
जिनगी–भर केतना
हरिन जइसन भागल बानीं।
बाकिर आज ले
दू बूंद पानी के अभाव में
प्यास हमरा के छल रहल बिया,
हम सचमुच अभागा बानीं।❐

केतना मुश्किल बा//३५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

हमरा सामने

हमरा सामने एगो भीड़ बिया–
भीड़ में चेहरा बाड़ेसन,
खूब हो–हल्ला बा,
भारी मारा–मारी बा,
बाकिर पहचान कहंवा बा ?
हमरा सामने एगो कविता बिया–
कविता में शब्द बाड़ेसन,
छोट–बड़ वाक्य बाड़ेसन,
बाकिर अर्थ कहंवा बा ?
हमरा सामने एगो तस्वीर बिया–
तस्वीर में चटक रंग बाड़ेसन,
रंगन में आकर्षन बा,
सूक्ष्म भाव–भंगिमा बा,
बाकिर सत्य कहंवा बा ?
भीड़, कविता आ तस्वीर,
तीनू समरूप लागत बाड़ीसन–
आकर्षक, बाकिर बिना परान के,
अपने ही अपरूप।
तीनू में जीवन कहंवा बा ?❐

काल के कबाड़-घर

काल के कबाड़घर में
पता ना केतना
कबाड़ भरल बा !

एने, एह कोना में
श्री–श्री १०८, १००८
महामंडलेश्वर,
महाराजाधिराज, भूपति,
अखिलेश्वर,
लड़ाई में लड़ेवाला देहधारी,
आतंकी, आततायी,
भक्तलो, पंडा–पुजारी,
नेता–अभिनेता,
शब्द–शिल्पी साहित्यकार,
साधक, आराधक,
निपुण कलाकार,
चारण–भाट, दरबारी,
सामन्त आ श्रीमन्त,
दस, बीस, तीस हजारी,
जाने केतना भरल बाड़े।

ओने, वोह कोना में
राजमुकुट, छत्र–सिंहासन,
तीर आ तलवार,
तोप, गोला, बन्दूक,

केतना मुश्किल बा//३७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

सोना–चांदी से भरल
सन्दूके–सन्दूक,
राज–प्रशस्ति से भरल,
काव्य–ग्रन्थ, महाकाव्य,
चित्र आ मूर्तियन,
विचित्र कला–कतियन,
तगमा–उपाधियन,
मानपत्र, अभिनन्दन–ग्रन्थ,
तबला, तंबूरा, ढोलक,
नगाड़ा आदि बाद्ययन्त्र
अनगिनत बोरन में
भरल बाड़े, धइल बाड़े।

पूरा कबाड़–घर
भरल पड़ल बा कबाड़ से,
तबो, कबाड़ के आइल
अबहीं जारी बा।
देखीं, अब आगे
कवना–कवना के बारी बा।❐

एकान्त-चिन्तन

हम नदी के किनार पर
एकान्त में लेटल बानीं।
नदी का ह ?
हम कवन हईं ?
लेट ले लेटल
सोचत बानीं, आंकत बानीं।

जीवन,
जल जइसन बह रहल बा जवन,
कलकल–छलछल
हम ना समुझीं, कह रहल बा जवन।
जीवन–जल के का गति बा ?
बहते रहलही नियति बा ?
हम अथाह पानी में
आ मन में झांकत बानीं।
नदी का ह ?
हम कवन हई ?
लेटले–लेटल
सोचत बानीं, आंकत बानीं।

तबे मन में सांझ गहिर,
बदरी जइसन, घिर जात बिया।
देखत बानीं, लमहरा ले बा
ना केहू संघतिया ना, केहू साथी।
नइखे ज्योति, नइखे बाती।

लमहरा कतहीं, बस, लमहरा
झींगुरन के शोर बा,
आहट से ठिठकेले सन जवन।
भा चमगादड़न के
ऐयाशियन के दौर बा,
अन्हारे में निकललेसन जवन।

हम एइजा केकरा के पुकारीं ?
शून्य में एइजा के बा साथी ?
लमहराले बस सांझ गहिर
कहंवा ज्योति, कहंवा बाती !!❐

ऊ ना रहले

ऊ ना रहले,
काल्ह जेकरा मूड़ी पर रहे ताज
अउर हाथ में रहे राजदंड,
ऊ आज ना रहल।
ऊहो आज ना रहल,
जेकरा एगो हाथ में रहत रहे शराब
आ रहत रहे दोसरका
सुन्दरी के जांघ पर।
रहल ऊहो ना,
जेकर हाथ हरदम रहत रहे तंग
आ पेट खाली, बेढंग,
आज ऊहो ना रहल।
मनलीं कि सब अलग–अलग जियले,
एके रास्ता से अइले
अउर एके ढंग से गइले।
ना रहब,
काल्ह उनहीं के अइसन
हमहूं ना रहब,
जे काल्ह रहे, आज ना रहल।
मित, इहे असली तथ्य बा
कि जीवन बा झूठा,
मुवले सनातन सत्य बा।❐

केतना मुश्किल बा//४१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

मकड़ी

रउरा देखले बानीं मकड़ी के
अपना चारु ओर
महत्त्वाकांक्षा के सबके
जाल बुनत ?
उलझत–छटपटात ?
सिर धुनत ?
हम जबहीं मकड़ी के
एह अभिशाप के देखले बानीं,
मकड़ी के रूप में
अपना–आपके देखले बानीं।❐

केतना मुश्किल बा//४२//डॉ० रामनिवास 'मानव'

का मिलल ?

जिनगी में का मिलल ?
खाली अभाव
अउर बस, अउर
संघर्षन के सिलसिला।❐

केतना मुश्किल बा//४३//डॉ० रामनिवास 'मानव'

बाकी

साठ पन्ना के पुस्तिका के
पूरा भइल
तिरपनवां पन्ना।
अब बा बाकी
खाली उपसंहार
आ कुछ परिशिष्ट।
सब कुछ बा अवशिष्ट।❐

लड़ाई

(घाटियन से गुजरत)
जिनगी से लड़ाई
हमार ठनल बा।
बाकिर जिनगी भी जान लेव,
'मानव' लोहा के बनल बा।❐

केतना मुश्किल बा//४५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

हम हंसलीं

हम हंसलीं,
जिनगी पर खुलिके हंसलीं।
हम चहले रहलीं कमल के फूल,
शायद इहे रहे हमार भूल।
एही से हम आज
ठेहुना तक बानी
गहिरा दलदल में फंसल।

हम केतना तड़पलीं–छपटइलीं
कबो रोवलीं, कबो मुस्कइलीं।
बाकिर चाहिके भी
निकल कहां पवलीं,
अइसन मकड़जाल में फंसलीं।❐

केतना मुश्किल बा//४६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

सूरज होखेला आदमी

तू देखले बाड़ अक्सर
क्षितिज से उठत सूरज के,
बाकिर अब देखब तू
सतह से उठत,
सूरज होत आदमी के।

यार, आदमी के आगी
सूरज से कम नइखे।
जब–जब पहचनले बा आदमी
एह आगी के,
जब–जब तपल बा आदमी
एकरा गर्मी में,
ऊ तब–तब उठल बा
सतह से, सूरज के तरह,
आसमान ले उठल बा,
बार–बार उठल बा आदमी।

देख, तपे के चाहत बा
ऊ आदमी,
जरे के चाहत बा आगी में
सोना के तरह,
ताकि बन सके कुन्दन
आ लिख सके अग्निगान
खूशबू के, पत्थरन पर।

केतना मुश्किल बा//४७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

बिना तपले
फूल में, आदमी में,
खूशबू पैदा कहां होखेले !
एहसे यार लो, सतह के ना,
सतह से उठत
आ सूरज होखत
वोह आदमी के देख। ❐

हम, मंच आ परदा

हम परदा के आगे रहीं भा पीछे,
कवनो फर्क ना पड़ी हमरा,
काहें कि हम ना अभिनय जानत बानीं
अउर ना निर्देशन।
एइजा उहे बा सफल,
जे पारंगत बा एइमें से कवनो एगो
भा फेर दूनू कला में।
अइसन में बांचत बिया
हमरा खातिर एकेगो भूमिका–
दर्शक, खाली दर्शक के।
हम देखि के अभिनेता के अभिनय
ओकरा संगे हंसीं भा रोईं ?
भा फेर निर्देशक के
निर्देशन के सराहीं
आ बजाईं ओकरा खातिर ताली ?
जहां मंच पर

चल रहल होखे नाटक,
ओइजा कुछउ ना होखेला दर्शक के।
बन्हाइल होलेसन ओकर हाथ,
अभिनेता भा निर्देशक के साथ।
ओकरा करे के होखेला इंतजार
परदा उठे भा गिरे के,
अभिनेतासन के आवे आ जाये के,

केतना मुश्किल बा//४६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

रोवे आ गावे के,
ताकि बजावत रहे ऊ ताली
आ बजावत रहे परदा गिरे तक।❐

केतना मुश्किल बा//५०//डॉ० रामनिवास 'मानव'

हमार आंगन

आसमान के देखि के हमार आंगन
सिकुड़िके–सिमटिके अपने में
अउरिओ छोट हो जाला।
अइसन काहें होला मित ?
मनलीं कि आसमान
खुलल आ असीम बा,
बाकिर आसमान कब कहेला
कि हम बड़ बानीं
अउर आंगन छोट बा।
फेर हमार आंगन
छोट काहें हो जाला ?
मित, हमार आंगन
आसमान काहें ना हो जाला ?
आंगन के वोह कोना में
खाढ़ गुलाब के तू देखत बाड़।
जब ओइ पर बसन्त खिलेला,
खूशबू फूटेले,
तब देवाल हमरा आंगन के
हो जालीसन अउर ऊंच,
ईट–दर–ईट, अपने–आप।

हमार आंगन गुलाब के सब खुशबू के
बान्ह लेबे के चाहेला अपने भीतर।
बाकिर खुशबू
कबो बन्हाइल बिया का !

केतना मुश्किल बा//५१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

हम अपना आंगन के सोचत–सोचत
हर आंगन पर आ जात बानीं।
हमरा लागत बा,
हर आंगन कटल–छंटल बा,
टुकड़न में बंटल बा।
चारदीवारी के भीतरो
कई–कई गो देवाल खाढ़ बाड़ीसन,
जवन बेशक लउकेलीसन ना,
बाकिर खूब बरिआर बाड़ीसन।
जवन खुशबू ईंट–पत्थर के
चारदीवारी से ना रुक सके,
ऊ एह अदश्य देवालन से
रुकि जाले, बन्हा जाले।

हम सोचत बानीं,
ई सब देवाल ढह काहें नइखी जात
आ हर आंगन फइलि के
आसमान काहें नइखे हो जात,
जवना से खुशबू,
आंगन के गुलाब के
सगरे धरती के हो सके।❐

सूरज सभे के ह

तू देख रहल बाड़ सपना
सूरज के मुट्ठी में बान्हे के,
गलती करत बाड़ तू।
तू चाहत बाड़ कैद करे के
रोशनी के इच्छा के जेल में,
फेर थूकत बाड़ तू।

अहं के सीढ़ी चढ़िके
सूरज के प्रचंड रोशनी के
छूवेवाला हमार हठधर्मी मित !
सूरज तहरा बंगला के
मरकरी बल्ब नाह,
जवना के तू अपना मर्जी से
जरा सक, बुता सक।
अउर ना रोशनी कवनो खैरात ह,
जवना के तू अपना–अपना लोगन में
बांट सक, बिखरा सक।

मनलीं कि सूरज के
सोनहुला–उजर किरिन के
कवनो फेरीवाला का तरे
फटेहाल झुग्गियन में गइल
तोहरा अच्छा ना लागे।

बाकिर विषमता के ई जहर–गाछ
आदमी उगवले बा।
ई वर्ग, ई जाति, ई बन्धन,
सब आदमी बनवले बा।

सूरज समदर्शी बा
आ तोहरा
गगनचुम्बी अट्टालिका से ऊंचा।
ओइजा से अट्टालिका आ झोपड़ी में
रोशनी एक संगे आवेले,
बराबर आवेले।
तू चाह भा मत चाह,
बाकिर सूरज हमेशा चमकी
आसमान में आजाद,
आ ओकर रोशनी
तहरा अट्टहास करत
अट्टालिका के संगे
झाबर के पलानी पर भी पड़ी।

तू आपन खिड़की बन्द करि के
खाली अन्हार कैद करि सकेल,
रोशनी ना।
सूरज सबके ह, रोशनी साझी बा।❐

हम : महानगर

चीख–पुकार के आबादी में
हम सन्नाटा अइसन भुला जात बानी,
महानगर हो जात बानी।
सूरज निकलते निकल जात बानी
छोड़ि के परिवार–घर।
दउड़त बानी बस के पीछे,
खोजत बानी रूट–नम्बर।
आ फेर लवटत बानी
धुआंत सांझ के संगे,
अस्त व्यस्त छोड़ि के दफ्तर।
दिल–दिमाग सब खाली,
जइसे टिफिन कैरियर।
खाली सांस चलत बिया,
मुंह ढंपले रात ढलत बिया।
दिल–दिमाग पर
चढ़त जात बाड़ीसन फिकिर
नोटिंग–पर–नोटिंग जइसन।
आ फेर जागले–जागले
हम जइसे सुत जात बानी,
महानगर हो जात बानी।❐

केतना मुश्किल बा//५५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

भाग-दौड़

दिल्ली, हैदराबाद, बंगलोर,
आज सब जगे बा
सूचना–क्रान्ति के शोर।
उठापटक, भागम–भाग,
स्वार्थ आ आपाधापी के दौर।
सुख–साधन के चाहत में
हम केतना आगे निकल आइल बानीं।
महतारी–बाप, बीबी–बच्चा, घर–बार,
सब पीछे छोड़ आइल बानीं।❐

केतना मुश्किल बा//५६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

समर्पण

तोहरा के बा समर्पित सब–के–सब
हमार चुप्पी, हमार शब्द,
आ कविता भी।

हम आज, जीवन के एह मोड़ पर,
जब सोचत बानी
घटा के जोड़ि के,
त लागत बा
(शायद सांच भी इहे बा)
एगो तूं ही सांच,
सनातन आ समरथ बाड़।

ए हमार महाशून्य !
हमरा के सुन।
चाहत बालो कुछ कहे के
हमार चुप्पी, हमार शब्द,
आ कविता भी।
सम्भव बा हम समुझा ना सकीं,
बाकिर तू समझ सकब
एकनी के ठीक से शायद।❐

केतना मुश्किल बा//५७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

घरौंदन के खेल

बच्चा बनावेला
माटी के धरौंदन के,
खेलेला कुछ देर
आ फेर अचानक
तूर देला ओकनी के,
खेले–खेल में।
जाने कबसे ई खेल
अइसहीं जारी बा।
बने–टूटे के
कबो एह घरौंदा के,
त कबो वोह घरौंदा के
बारी बा।❐

केतना मुश्किल बा//५८//डॉ० रामनिवास 'मानव'

महाभारत-प्रक्रिया

कौरव भी हमहीं बानीं, पांडव भी,
आ कष्ण भी हमहीं बानीं।
लड़ल जा रहल बा एगो महाभारत
हमरा भीतर, बार–बार।
हमहीं भरले बानीं हुंकार,
सुनवले बानीं गीता,
सुनले बानीं हाहाकार छाती चीर देने वाला।
हम महसूस कइले बानीं लगातार अपना हृदय में
कौरवन के कुत्सा के,
पांडवन के ताकत के
आ कष्ण के उपदेश के, नीति के।

हमरा भीतर चलल बाड़ेसन बान,
टकराइल बाड़ीसन गदा।
दउरल बाड़ेसन रथ–घोड़ा,
भइल बा शंखनाद।
हमहीं लड़ल बानीं लड़ाई।
हमहीं हारल बानीं लड़ाई !!
हमहीं जीतल बानीं लड़ाई !!!

बाकिर अन्त कवनो भी लड़ाई के
ना होखेला शान्ति।
फइलेला बस अशान्ति आ भ्रान्ति,
काहें कि लड़ाई जन्म देले
हिंसा के, प्रतिशोध के,

केतना मुश्किल बा//५६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

दोसरा लड़ाई के,
लड़ाई के अनन्त प्रक्रिया के।
हारल अहं उभरेला दम्भ बनिके,
आ सत्य के, न्याय के, धर्म के,
छाती पर
खाढ़ हो जाला तनिके।
जब–जब बाजेले दुंदुभि
कवनो कौरव के दम्भ के,
छिनाला अधिकार कवनो पांडव के,
तब–तब कवनो अर्जुन के
खून खउलेला
आ कवनो कष्ण गीता के तरजुई पर
झूठ–सांच तउलेला,
तब पूरा वातावरण
शंकालु आ संघर्षमय हो जाला,
एगो महाभारत तय हो जाला।❐

केतना मुश्किल बा//६०//डॉ० रामनिवास 'मानव'

होखेवाला इतिहासकार का प्रति

हमार होखेवाला इतिहासकार मित !
आज से एक सई बरिस
भा दू सई बरिस बाद
तू लिखब हमरा युग के इतिहास
यानी बीसवीं सदी के
तब का–का लिखब तू ?

तू लिखब, जातिवाद के
एइजा ऊंच रहे परचम तनल।
तू लिखब, प्रजातन्त्र रहे
कुछ हाथन में बंधक बनल।
तू लिखब, आतंक एइजा
मंत्री–पद पर मूर्तिमान रहे।
तू लिखब, दुराचार के
एगो राष्ट्रीय कीर्तिमान रहे।
तू लिखब, जिन्दा जरत
हरिजनन के व्याकुल व्यथा।
तू लिखब, लाज लुटात
मेहरारुन के कावतर कथा।
तू लिखब, एइजा दमन के
तांडव रोज खुलले होत रहे।
व्यवस्था के चौराहा पर
दिन में चीर हरण होत रहे।
तू लिखव, चर जात रहले
रखवाला ही खेत के एइजा।

केतना मुश्किल बा//६१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

तू लिखब, राज मिलल रहे
आदमी के प्रेत के एइजा।
तू लिखब निहित स्वार्थ से
कइसे एइजा सब–कुछ जरल।
आ लिखब, काटत रहे
भाई अपना भाई के गर्दन।
तू लिखब, कइसे एइजा
लंगटे झूठ–सांच के छलल।
तू लिखब, पाखंड एइजा कइसे
धर्म के घर में पलल।
तू लिखब, भटकल करेले
कइसे एइजा घर–घर कला।
आ मंच पर मांजेले
मौकापरस्ती आपन गला।

हमार दोस्त ! हमरो चित्रित करे के बा
अपना इतिहास के कवनो पन्ना पर
वोह आदमी के रूप में
झूठ से, अधर्म से, अन्याय से,
जे जिनगी–भर लड़त रहल,
आ भूखल–पियासल
निश्चल–लगातार
एगो आदर्श, एगो सपना, एगो कल्पना के
सुन्दर मूर्ति गढ़त रहल।❐

आदमी के विकास

धर्म के राह पर चलत–चलत
आदमी
वेद से पुरान तक पहुंचल,
गीता से ग्रन्थसाहब तक
आ बाइबिल से
कुरान तक पहुंचल।
मन्दिर–मस्जिद, गिरजा–गुरुद्वारा,
सब झांकि के देखलस।
उपदेश सुनलस, सिद्धान्त पढ़लस,
आदर्श सब फांकि के देखलस।
जबले ओकरा
धर्म के नशा रहल,
एको पल ऊ कबहूं
चैन से ना सुति सकल।
हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख–ईसाई,
जैन–बौद्ध–पारसी,
ऊ सब भइल,
ना भइल त खाली
इन्साने ना हो सकल।❐

केतना मुश्किल बा//६३//डॉ० रामनिवास 'मानव'

बालू के टीला

लमहरा ले फइलल
बादामी, तनी–तनी पीला
लागेले सुन्दर–मनभावन
बालू के टीला।
सरकत जाले ई
हवा–आंधी से लगातार
विकसित होखेले
मानव सभ्यता जइसे
हर छन धरती पर।

हमरा लागता कि
ई बालू के टीला
उड़ि के
शहर में पसरि गइल बाड़े
आ आंखिन के रास्ते
आदमी के दिल में
उतरि गइल बाड़े।

बालू के टीला
आ विकास होत सभ्यता,
केतना समानता बा
दूनू में।
गतिशीलता, बदलाव, सुन्दरता,

केतना मुश्किल बा//६४//डॉ० रामनिवास 'मानव'

सब बा ई सही बा,
नाहीं बात खाली
दूनू में नेह नइखे।❐

केतना मुश्किल बा//६५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

सम्बन्ध

मनलीं कि आपन सम्बन्ध
बा एगो सांच,
तबो मत द एकरा के
कवनो स्वर या कि नाम,
रहे द बस मूक आ अनाम।

वोह दिन
कोंपल अइसन कोमल तहार
लाल होठ पर
झलकि आइल रहे हंसी
अम्लान ओस अइसन,
तब हम
तोहरा मन पर लिखल
पढ़ लीहले रहलीं
कविता भाव–भरल।
अइसहीं जब तू
एक छन खातिर
दष्टि डललस आपन लजाइल,
रसभरल–लचकवलू,
उभर आइल रहे मनभावन कविता।
असल में सच्चा सम्बन्ध
संकेत में बोलेला
आ अव्यक्त होके भी
भावना के
बन्द द्वार खोलेला।

केतना मुश्किल बा//६६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

अनाम सम्बन्ध जवन बोलेला,
ऊ काव्य होला,
नामवाला सम्बन्ध के स्वर में
त औपचारिकता बोलेली सन।❐

केतना मुश्किल बा//६७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

कैक्टस

तोहार दीहल कैक्टस
अपना अंगना में लगवले बानीं
हम बड़ा संभालि के,
बड़ा प्यार से।
जब देखीले,
एक कैक्टस में
तोहार चेहरा उभरि आवेला।
चुभेवाला हर कांट
तोहरे अइसन दंश दे जाला।
एकरा के छुवते गिरेले
खून के एक बूंद,
अंगुरी के पोर से।
बाकिर खून के ऊ बूंद
बन जाले फूल गुलाब के,
काहें कि बात कैक्टस के ना,
भावना के बा।
यदि कैक्टस के परस में
तोहार परस ना होखे,
त ई कैक्टस
कांटन के सिवाय का बा !❐

केतना मुश्किल बा//६८//डॉ० रामनिवास 'मानव'

मन के मौसम

तोहरा ओठ पर
हलुक मुस्कान देखिके,
आंख में सपना जागल
आ लागल,
सूखल पतइन के बीच
जइसे कवनो अंकुर उगल।
बाकिर दोसरे छन
तोहरा चेहरा पर झलक आइल
बोझिल बेचैनी
हमके उदास कर दीहलस।
मन में, आंख में,
उमस, उदासी आ लोर भर दीहलस।
जइसे कोहरा के बदरी
हमरा आस–पास उतर गइली।
उमंग–उदासी के ई
धूप–छाहीं चक्कर
तेज गति से चलेला।
हर उमंग एइजा
दिन अइसन चढ़ेला–ढलेला।
यानी आदमी के मन
बरसाती मौसम नियर
पल–पल बदलेला।❐

केतना मुश्किल बा//६६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

पुल के ऊपर-नीचे

हम एगो पुल के लगे खाड़ बानीं।
गुजर रहल बिया पुल से
एगो धड़धड़ात रेलगाड़ी।
आसमान में तेज रफ्तार से
उड़ रइल बा एगो हवाई जहाज
आ नीचे से निकल रहल बिया
धूरा उड़ावत एगो बैलगाड़ी।
हम सोचत बानीं,
सिर खपावत बानीं,
बाकिर समुझ नइखीं पावत,
कि एइमें से कवन ह
भारत के असली सांच।❐

केतना मुश्किल बा//७०//डॉ० रामनिवास 'मानव'

दुःख

दुःख त पानी ह।

दुःख के मार से
आदमी जेतना धोवाला,
ओतने साफ होला।

दुःख के दोष दीहल
खाली नादानी ह।
दुःख त पानी ह।❐

केतना मुश्किल बा//७१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

आस्था

आस्था झील के काई ना,
जवन एइजा से ओइजा
हवा के संगे तैर जाव।
आस्था ऊ पौधो ना
जवन मन के मोताबिक
बोवल आ बढ़ावल जाव।

आस्था ऊ दूब ह
जवन बहरी ना,
आदमी के भीतर उगेले
आ जवना के ताजगी
पहिलके बरसात में फूटल
हरियरी के तरे
सबकर मनमोहि लेले।

आस्था आदमी के
आदमी के पहचान देले।❐

केतना मुश्किल बा//७२//डॉ० रामनिवास 'मानव'

अंगुरी

बुलबुला के तरे मेटल
आदमी के नियति ना।
आव, प्रयास कके देखल जाव,
शायद हमनी
दउड़त समय के पीठि पर
अपना अंगुरियन के चिह्न
अंकित कर सकल जाव।
लिख सकल जाव दूगो अक्षर
अपना नाम के।
तूं अपना अंगुरियन के
खाली हाड़–मांस मत समुझ।
ई अंगुरी छेनी बन सकत बाड़ीसन,
आ कलमो।
एह अंगुरियन से तूं
खोद सकत बाड़ कीर्ति–लेख
समय के शिला पर,
आ लिख सकत बाड़
एगो उजर कविता
भाग्य के पीठ पर।
एहसे ए अंगुरियन के
खाली हाड़–मांस मत समुझ। ❐

केतना मुश्किल बा//७३//डॉ० रामनिवास 'मानव'

चितेरा बोल

ओ चितेरा बोल तू !
ई चित्र सुन्दर–मनभावन
संसार के कइसे रचल ?
रंग एतना चुटीला–
हरियर–लाल, पीयर–नीला
पवल कहंवा से ?
भाव नया–नया सजना के
तोहरा तूलिका में
आइल कहंवा से ?
हम चकित बानीं,
रहस्य अब त खोल तू।
ओ चितेरा, बोल तू !
आ ई संगीत–सरिता
वेदना–संवेदना के,
बहतिया कल–कल।
नाच करत लहरियन में
अनगिनत भाव उच्छल
कहतिया छल–छल।
हम चकित बानीं,
कवन ई संगीत ?
ए सुर–साधक, बोल तू।
रहस्य सगरे खोल तू। ❐

केतना मुश्किल बा//७४//डॉ० रामनिवास 'मानव'

भुकभुकात अंजोर

कहीं दूर
सुनसान अन्हार घाटियन में
जरत बाड़ीसन कुछ ढिबरी
भा जरत–बुतात रहल
बाड़ीसन लालटेन।
कवनो खूब अन्हार इनार में
भुकभुकात होखसन
जइसे कुछ भगजोगनी।
लागता, जइसे
धरती पर रात में
जोन्हीयन के संगे
आसमान उतरि आइल बा,
आ पहाड़ पर लेटल बा
पहिन के करिया मटमैला
पोशाक जंगल के।❐

केतना मुश्किल बा//७५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

पहाड़ के संवाद

सांच–सांच कहिह पहाड़
हमार–तहार
कबके, का रिश्ता बा ?

आज तहार अपने,
केहू बुजुर्ग नियर
तहरा के छोड़ के अकेला
आ असहाय,
भाग रहल बाड़े
शहरन का ओर
भर के आंखिन में
रंग–बिरंगी सपना।
अइसन में तू
काहे लागत बाड़ हमरा
अपना अइसन आत्मीय ?
आ काहे बो लावत बाड़ हमरा के
बार–बार, प्यार से ?

तहार फइलल बांह
इयाद दियावत बाड़ी सं हमरा के
अपना बाबू जी के अनायासे।
जइसे कह रहल होखस,
चल अख हमार बचवा !

केतना मुश्किल बा//७६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

हमरा लगे,
आउर लाग जा
हमरा नेहमयी छाती से।

पहाड़ ! हमार आत्मीय !
हम सचहूं तहरा बांह में
खो जाये के चाहत बानी,
आ दूर तक फइलल
घाटियन आ जंगलन के
मुस्कात हरियालियन के
हो जाये के चाहत बानी।

सांच–सांच कहिह पहाड़ !
काहे बोलावत बाड़ हमरा के ?
का रिश्ता बा
हमार–तोहार पहाड़ !❐

केतना मुश्किल बा//७७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

आदमी आ पहाड़

तनकी भर ठंठा का पड़ल,
सिहर उठल आदमी।
बाकिर
पहाड़ के छाती त देख,
हजारों बरिसन से ओढ़ले लेटल बा
बर्फ के मोट चादर,
बाकिर कबहीं
उफ् तक ना करे।❐

केतना मुश्किल बा//७८//डॉ० रामनिवास 'मानव'

रिश्तन के धागा

सझुरावत रहेला/जंगल
नदी–नाला रूपी
रिश्तन के धागा।
बाकिर आसमान
लांघ के
पहाड़न के सीढ़ियन के
पल–भर में
बढ़ जाता आगे।❐

केतना मुश्किल बा//७६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

जंगल में सूर्यास्त

बहुत नीचे उड़त रहे
कवनो सोनहुला सारस।
ऊंचा–ऊंचा फेड़न के
सघन टहनियन में फंस गइल,
आ देखते–देखते
जइसे
हरियाली के सागर में
दूर कहीं धंस गइल।❐

केतना मुश्किल बा//८०//डॉ० रामनिवास 'मानव'

दयारा बुग्याल

बिछा के दुधिया चद्दर
निकाल रहल बिया
खुद प्रकति
रंग–बिरंगी, सुन्दर,
मन मोहेवाली फुलकारी।
बाकिर एह महंगा
मखमली चद्दर के
खरीदी के ?
इहां त सभे चुप बा।❐

केतना मुश्किल बा//८१//डॉ० रामनिवास 'मानव'

गूंज

कहीं गूंजता पहाड़,
कहीं शेर के दहाड़,
कहीं हाथी के चिघ्घाड़।
सब का कहत बाड़ेसन ?
केतना कुछ कहतारे सन ?
आव सुनल जाव,
शब्दन के चुनल जाव,
अर्थन के बुनल जाव,
आ कइल जाव
तइयार एगो कविता
गूढ़–गम्भीर,
भरल होखे जवना में
प्रकति के प्यार
आ पहाड़ के पीड़ा।❐

केतना मुश्किल बा//८२//डॉ० रामनिवास 'मानव'

पहाड़ के नियति

जाने का लिखल बा
पहाड़ के भाग्य में।
एक ओर, दिन–प्रतिदिन
रोजी–रोटी का तलाश में
बढ़त पलायन,
ओहिजा दोसरा ओर
बढ़त पर्यटन
आ वोही अनुपात में
फइलत प्रदूषण।
बढ़त कटान,
घटत चरान–चुंगान।
कटत–छंटत–घटत वन,
सिकुड़त गांव;
बिखरत जन–जीवन।
घटत–सिमटत हिमनद,
पद–प्रतिपद
बढ़त अतिक्रमण।
तीर्थाटन बनल पर्यटन,
रोज क्षीण होखत आस्था,
आ जर्जत होखत
व्यवस्था–कानून।
हावी भइल बा स्वारथ,
सबके पड़ल बा आपन।

केतना मुश्किल बा//८३//डॉ० रामनिवास 'मानव'

अइसन में के सोची
पहाड़ के विषय में,
के समुझी ओकर दर्द,
कइसे मिली ओकरा त्राण।❐

केतना मुश्किल बा//८४//डॉ० रामनिवास 'मानव'

पहाड़ के दर्द

नदी, जंगल, घाटी
सभ के सभ त बाडे मौन।
पहाड़ के दर्द
पहाड़ से ज्यादा
के जानत बा।❐

केतना मुश्किल बा//८५//डॉ० रामनिवास 'मानव'

पिट्ठू

पहाड़न के लोग
मेटावे खातिर भूख
बान्हि के पेट पर पट्टी
दिन–भर
केतना बोझा ढोवेले ?
ऊ जिनगी–भर
आदमी ना,
खाली पिट्ठू होखेले।❐

केतना मुश्किल बा//८६//डॉ० रामनिवास 'मानव'

पहाड़ के औरत

खाढ़ पहाड़ी,
चुभत नुकीला पत्थर।
सघन–सुनसान जंगल,
हिंसक जानवरन के घर।
पसरल बा चारु ओर
बस डरे–डर।
तबो बढ़त बाड़ीसन आगे,
चढ़त–उतरत बाड़ीसन
पहाड़ के औरत
पीठ पर लदले
घास के भारी बोझा।
परदेश में बा पति,
फेर जीवन में एकनी के
कइसन रंग, कइसन रति !
बनल वियोग नियति,
का गति का प्रगति !
जीवन इनकर
जीवन के खोज।
तबे त पहाड़ के औरत
पहाड़ अइसन बोझ
थाकल–झुकल कान्हन पर
ढोवत बाड़ीसन रोज।❐

केतना मुश्किल बा//८७//डॉ० रामनिवास 'मानव'

हिन्दी आ भोजपुरी में समान अधिकार से लेखनी चलावे में माहिर डॉ० भगवान सिंह 'भास्कर' के एगो आउर नीक प्रयास 'केतना मुश्किल बा' शीर्षक से डॉ० रामनिवास 'मानव' के हिन्दी कविता–संग्रह 'कितना मुश्किल है' के भोजपुरी–अनुवाद के रूप में प्रस्तुत बा। अनुवाद होखबो करेला बहुत मुश्किल, बाकेर 'भास्कर' जी ओ मुश्किल के सरल सटीक शब्दन आ सन्तुलित भावानुभव के संयोग से आसान बना के भोजपुरी साहित्य–संसार के एगो नीमन तोहफा देले बाड़ी। इ तोहफा 'भास्कर' जी के भरपूर साधुवाद के अधिकारी आ भोजपुरी–साहित्य के अमीर बना रहल बा।

–डॉ० उषा वर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी–विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा (बिहार)

डॉ० भगवानसिंह 'भास्कर' एने हिन्दी के स्थापित साहित्यकार डॉ० रामनिवास 'मानव' का हिन्दी कविता–संग्रह 'कितना मुश्किल है' के भोजपुरी–अनुवाद 'केतना मुश्किल बा' शीर्षक से कइले बाड़न, ई जान के हमरा बहुते खुशी भइल। एह अनूदित कविता–संग्रह का चउवनगो कवितन से गुजरला के बाद हमरा ई ना लागल कि एकर कवनो कविता आन भाषा के अनुवाद ह। डॉ० 'भास्कर' का एह अनुवादित कति के माध्यम से भोजपुरी समाज अपना समय आ समाज से परिचिते भर ना होई, बल्कि एकरा बदौलत भोजपुरी के साहित्य–संसार में सार्थक बढ़ोतरियो होई।

–डॉ० जयकान्तसिंह 'जय',
अध्यक्ष, भोजपुरी–विभाग,
बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ़्फ़रपुर (बिहार)